भारत सरकार
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग

राज्य सभा
अतारांकित प्रश्न सं. 2264

दिनांक 07/08/2026

बिहार से मखाना के निर्यात को बढ़ावा देने के उपाय

2264 डॉ. भीम सिंह :

क्या **कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) दरभंगा स्थित राष्ट्रीय मखाना अनुसंधान केंद्र के माध्यम से मखाना उत्पादकों की आय में वृद्धि करने के लिए क्या नई तकनीकें विकसित की गई हैं; और
(ख) बिहार से मखाना के निर्यात को बढ़ावा देने तथा क्लस्टर आधारित प्रसंस्करण इकाइयाँ स्थापित करने के लिए सरकार की क्या योजना है?

उत्तर

कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री
(श्री भागीरथ चौधरी)

(क) : मखाना उत्पादकों की आय को बढ़ाने के लिए भाकृअनुप-राष्ट्रीय मखाना अनुसंधान केंद्र, दरभंगा द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों और हस्तक्षेपों में शामिल है : अधिक पैदावार देने वाली मखाना किस्म स्वर्ण वैदेही, कांटा रहित सिंघाडा किस्में स्वर्ण हरित एवं स्वर्ण लोहित और मखाना-सह-मत्स्य पालन प्रणाली। इनका विवरण **अनुबंध I (क)** में दिया गया है।

(ख) : कृषि एवं प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (APEDA) द्वारा बिहार सरकार और अन्य हितधारकों के साथ सहयोग करते हुए निर्यात को प्रोत्साहन देने वाली पहल की गई जबकि भाकृअनुप-राष्ट्रीय मखाना अनुसंधान केंद्र, दरभंगा द्वारा तकनीकी हस्तक्षेपों के माध्यम से मखाना निर्यात के प्रोत्साहन को सहयोग किया जाता है। इसका विवरण अनुबंध **I (ख)** में प्रस्तुत है।

अनुबंध - I (क एवं ख)

{राज्य सभा के दिनांक 07.08.2026 के अतारांकित प्रश्न सं. 2264 का भाग (क) एवं (ख)}

क) भाकृअनुप-राष्ट्रीय मखाना अनुसंधान केंद्र, दरभंगा द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियां एवं तकनीकी हस्तक्षेप

उच्च उपज देने वाली मखाना की नई किस्म 'स्वर्ण वैदेही' का विकास जलीय फसलों के उत्पादन में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इस किस्म की औसत उत्पादन क्षमता 28-30 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है, जो कि पारंपरिक खेती (14-16 क्विंटल प्रति हेक्टेयर) की तुलना में लगभग दोगुनी है। इसके साथ ही इसकी उन्नत खेती के लिए बेहतर कृषि तकनीकों का पूरा पैकेज भी विकसित किया गया है। इसके अलावा, सिंघाड़े की दो कांटारहित किस्में - 'स्वर्ण हरित' और 'स्वर्ण लोहित' भी विकसित की गई हैं। इन किस्मों की खेती मखाना की फसल कटाई के बाद की जा सकती है। इससे फसलचक्र सघनता बढ़ती है, भूमि का बेहतर उपयोग होता है और किसानों की आय में वृद्धि होती है। इसके अतिरिक्त, मखाना-सह-मत्स्य पालन प्रणाली विशेष रूप से चौर भूमि में बहुत प्रभावी सिद्ध हुई है। इस पद्धति से केवल मखाना की खेती की तुलना में किसानों को 40-50 प्रतिशत अधिक आय प्राप्त होती है।

ख) मखाना के निर्यात को बढ़ावा देने में कृषि एवं प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (APEDA) तथा भाकृअनुप-राष्ट्रीय मखाना अनुसंधान केंद्र, दरभंगा द्वारा की गईं पहल एवं हासिल प्रमुख उपलब्धियां इस प्रकार हैं :

कृषि एवं प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (APEDA) द्वारा किए गए प्रमुख प्रयासों में शामिल है : राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड (NHB) के कलस्टर विकास कार्यक्रम के अंतर्गत मिथिला मल्टी कमोडिटी बागवानी कलस्टर का विकास, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेलों में भागीदारी, क्रेता-विक्रेता बैठकों का आयोजन, तथा ऐसी अन्य निर्यात प्रोत्साहन गतिविधियों का आयोजन करना। GI-टैग्ड मिथिला मखाना के निर्यात को विशेष तौर पर लक्षित करते हुए बिहार के बागवानी निदेशालय के साथ समझौता ज्ञापन किया गया। कृषि एवं प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (APEDA) द्वारा मखाना उत्पादकों और निर्यातकों को प्रोत्साहित करने के लिए निर्यातक-उत्पादक बैठकें, 100 से अधिक क्षमता निर्माण एवं जागरूकता कार्यक्रम, तथा किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ) और क्रेडिट रेटिंग इन्फार्मेशन सर्विसीज ऑफ इंडिया (CRISIL) के साथ संयुक्त सत्र आयोजित किए गए हैं ताकि उन्हें बाजार बुद्धिचातुर्य उपलब्ध कराया जा सके। बुनियादी ढांचे को मजबूत करने के लिए पटना में एकीकृत पैक हाउस तथा कॉमन फैसिलिटी सेंटर की स्थापना की गई है। इनमें विकिरण सुविधा भी उपलब्ध है, जिससे मखाना की गुणवत्ता, भंडारण अवधि (शेल्फ लाइफ) और

खाद्य सुरक्षा में सुधार हुआ है। इसके अतिरिक्त, वर्ष 2021-22 से 2025-26 के दौरान बिहार से मखाना के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए नौ वर्चुअल और एक प्रत्यक्ष (फिजिकल) अंतरराष्ट्रीय क्रेता-विक्रेता बैठक आयोजित की गई हैं।

भाकृअनुप-राष्ट्रीय मखाना अनुसंधान केंद्र, दरभंगा द्वारा किए गए तकनीकी हस्तक्षेपों में शामिल हैं : उन्नत उत्पादन, कटाई उपरांत प्रबंधन, उत्पाद की गुणवत्ता, पोषण मान, भण्डारण काल तथा निर्यात प्रतिस्पर्धा को बढ़ाने के लिए प्रसंस्करण एवं मूल्य वर्धन प्रौद्योगिकियों का विकास एवं प्रसार। साथ ही इसमें वैज्ञानिक खेती, स्वास्थ्यकर प्रसंस्करण, ग्रेडिंग, पैकेजिंग, गुणवत्ता मानक तथा निर्यातोन्मुख रीतियों पर नियमित प्रशिक्षण देते हुए किसानों, उद्यमियों, प्रसंस्करणकर्ताओं तथा हितधारकों के क्षमता निर्माण को भी प्राथमिकता दी जाती है। पिछले तीन वर्षों के दौरान इस प्रकार के कुल 46 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए जिनमें 2500 से भी अधिक किसान/उद्यमी/निर्यातक और अन्य हितधारक लाभान्वित हुए। कृषि एवं प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (APEDA), एक्ज़िम बैंक (EXIM Bank) तथा क्वालिटी काउन्सिल ऑफ इंडिया (QCI) जैसे संगठनों के साथ सहयोग करते हुए गुणवत्तापूर्ण उत्पादन, मूल्य संवर्धन, बाजार से बेहतर जुड़ाव तथा निर्यात को बढ़ावा देने के उद्देश्य से समय-समय पर हितधारकों के परामर्श कार्यक्रम, कार्यशालाएं और जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। वर्ष 2026 में कृषि एवं प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (APEDA), क्वालिटी काउंसिल ऑफ इंडिया (QCI) तथा एक्ज़िम बैंक (EXIM Bank) के सहयोग से ऐसे दो कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं।

****